व्याकरण दर्पण 5

1. भाषा और व्याकरण

1 (क) हम बोलकर, सुनकर, लिखकर, पढ़कर अपने विचार एक-दूसरे तक पहुँचाते हैं तथा एक-दूसरे के विचार ग्रहण करते हैं। एक-दूसरे तक विचार पहुँचाने के इस साधन को भाषा कहते हैं।

(ख) भाषा के दो रूप हैं – 1. मौखिक 2. लिखित

मौखिक भाषा – रेडियो से समाचार सुनना।

लिखित भाषा – समाचार-पत्र पढ़ना।

(ग) वह शास्त्र जो हमें शुद्ध भाषा बोलना और लिखना सिखाता है, उसे व्याकरण कहते हैं।

(घ) भाषा में मौखिक ध्वनियों को लिखित रूप देने के लिए चिह्न निश्चित किए जाते हैं। इन्हीं चिह्नों के समूह को लिपि कहते हैं।

(ङ)

भाषा	–	हिंदी	अंग्रेज़ी	पंजाबी	उर्दू
		↓	↓	↓	↓
लिपि	–	देवनागरी	रोमन	गुरमुखी	अरबी-फ़ारसी

2 हिंदी–देवनागरी; अंग्रेज़ी–रोमन; पंजाबी–गुरमुखी; उर्दू–अरबी-फ़ारसी

3 (क) हिंदी (ख) मौखिक (ग) लिपि (घ) लिखित (ङ) शब्द

बहुविकल्पी प्रश्न

(क) राजभाषा (ख) 22 (ग) रोमन (घ) मराठी

रचनात्मक गतिविधि

संस्कृत – संस्कृत प्राचीन भारत की सबसे लोकप्रिय भाषा थी। अब केवल उत्तराखंड राज्य में कुछ स्थानों पर तथा दक्षिण भारत के कुछ स्थानों पर इसका प्रयोग होता है।

पंजाबी – पंजाब, हरियाणा, दिल्ली

डोगरी – जम्मू-कश्मीर, पंजाब

बंगला – पश्चिम बंगाल, असम, त्रिपुरा

संथाली – बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड तथा उड़ीसा के आदिवासी क्षेत्रों में

हिंदी – बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड

मराठी	–	महाराष्ट्र	कोंकणी	–	गोवा
मणिपुरी	–	मणिपुर	कन्नड़	–	कर्नाटक
बोडो	–	असम	तमिल	–	तमिलनाडु
कश्मीरी	–	जम्मू-कश्मीर	तेलुगु	–	आंध्र प्रदेश, तेलंगाना
उर्दू	–	जम्मू-कश्मीर, दिल्ली	मैथिली	–	बिहार, झारखंड
सिंधी	–	सिंध (पाकिस्तान)	नेपाली	–	सिक्किम
उड़िया	–	उड़ीसा	मलयालम	–	केरल
गुजराती	–	गुजरात	असमिया	–	असम, अरुणाचल प्रदेश

2. वर्ण विचार

1 (क) वर्ण भाषा के वे ध्वनि चिह्न हैं, जिनके और टुकड़े नहीं हो सकते।
वर्ण दो प्रकार के होते हैं – स्वर और व्यंजन।

(ख) स्वर को बोलने में किसी दूसरी ध्वनि की सहायता नहीं ली जाती। जबकि व्यंजनों को बोलते समय स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है। हिंदी में स्वरों की संख्या ग्यारह और व्यंजनों की संख्या तैंतीस है।

(ग) अरबी-फ़ारसी का आगत वर्ण – नुक्ता
अंग्रेज़ी का आगत वर्ण – ऑ

(घ) संयुक्ताक्षर में व्यंजन को किसी दूसरे व्यंजन के साथ मिलाकर लिखा जाता है। जबकि दवित्व व्यंजन दो समान व्यंजनों से मिलकर बनते हैं।

2 कंगन साँप कुआँ बंदर खाँसी बंदूक चाँदनी मंदिर रंग
अँधेरा अँगीठी संतरा ऊँट आँगन चाँदी

3 संयुक्त व्यंजन – कक्षा, त्रिशूल, परिश्रम।
संयुक्ताक्षर – ध्यान, भक्ति, शक्ति।
व्यंजन द्वित्व – कुत्ता, गत्ता, धब्बा।

4 र

करनी	प्रदीप	धर्म	ट्रेन
डगर	भ्रमण	धैर्य	ट्रक
रेत	उम्र	आशीर्वाद	ड्रम
रात	द्रव		

5 गिलास – ग् + इ + ल् + आ + स् + अ
कलश – क् + अ + ल् + अ + श् + अ
सूर्य – स् + ऊ + र् + य् + अ

बहुविकल्पी प्रश्न

(क) इ (ख) 25 (ग) त्रिशूल (घ) प्राण

रचनात्मक गतिविधि

यह गाँव बहुत ही खूबसूरत है। इसमें एक मंदिर है। मंदिर में घंटी लटकी है। पास ही कुआँ है। गाँव में बड़ा-सा पेड़ है। पेड़ की डाल पर एक बंदर बैठा है, जिसकी पूँछ लंबी है। यहाँ पर मिठाई की दुकान भी है। दुकान पर एक व्यक्ति मिठाई बेच रहा है, तो दूसरा व्यक्ति मिठाई खरीद रहा है। मिठाई की दुकान के पास वाली दुकान पर रंग-बिरंगे कपड़े टँगे हैं। कुत्ता रोटी खा रहा है। गुब्बारे वाला रंग-बिरंगे गुब्बारे बेच रहा है। उसके पास कंधे में बस्ता टाँगे बच्चा खड़ा है। बच्चा गुब्बारे वाले से गुब्बारे माँग रहा है।

3. शब्द-रचना

1 (क) वर्णों का वह समूह जिसका अर्थ निकलता हो, शब्द कहलाता है।

(ख) शब्दों को निम्न आधारों पर बाँटा जाता है–

1. उत्पत्ति के आधार पर 2. अर्थ के आधार पर

3. प्रयोग के आधार पर

(ग) अर्थ के आधार पर शब्दों के प्रकार हैं–

1. एकार्थी शब्द 2. अनेकार्थी शब्द 3. पर्यायवाची शब्द 4. विलोम शब्द

(घ) विकारी शब्दों का रूप लिंग, वचन और काल के कारण बदल जाता है। हिंदी में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण विकारी शब्द है। अविकारी शब्दों में किसी भी कारण बदलाव नहीं आता। हिंदी में क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक अविकारी शब्द हैं।

2 तूफ़ान दही कान नींद ऊँट घी मोर

3 अमीर × गरीब रात × दिन एक × अनेक

सुगंध × दुर्गंध गरम × ठंडा सुख × दुख

4 शेर – सिंह आग – अनल वायु – पवन

वृक्ष – पेड़ माता – माँ

बहुविकल्पी प्रश्न

(क) देशज (ख) लोटा (ग) अविकारी (घ) दधि

रचनात्मक गतिविधि

तत्सम – मस्तक, हस्त, दंत

तद्भव – कमरा, कबूतर, नदी

देशज – लोटा, रज़ाई, दीप

विदेशी – डॉक्टर, साबुन, फ़ौज

म	स्त	क	म	रा
फ़ौ	ज	बू	लो	दं
ह	स्त	त	टा	त
डॉ	क्ट	र	ज़ा	ई
सा	बु	न	दी	प

4. संज्ञा

1 (क) किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, स्थान अथवा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं। जैसे – शालू, कार, प्रीत विहार, दया।

(ख) संज्ञा के तीन भेद हैं– 1. व्यक्तिवाचक 2. जातिवाचक 3. भाववाचक

(ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा में शब्द किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान के नाम का बोध कराते हैं। और जातिवाचक संज्ञा में शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा प्राणी की पूरी जाति का बोध कराते हैं।

(घ) व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, स्थान आदि के गुण-दोष, दशा या भाव का बोध कराने वाले शब्द भाववाचक संज्ञा कहलाते हैं।

2 नदी – गंगा खिलाड़ी – विराट कोहली पर्वत – हिमालय

स्थान – दिल्ली देश – भारत लेखक – हरिवंशराय बच्चन

फल – आम इमारत – कुतुबमीनार

3 खुशी, वीरता, बचपन, मित्रता, उदासी, हरियाली, अच्छाई।

4 (क) अध्यापक, कहानी (ख) देश, झंडा

(ग) शालू, गुड़िया (घ) सेना, वीरता

5 (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓

बहुविकल्पी प्रश्न

(क) ऊँचाई (ख) व्यक्तिवाचक (ग) फल (घ) जातिवाचक

रचनात्मक गतिविधि

एक बड़े **जंगल** में अनेक **पशु-पक्षी** रहते थे। वहाँ एक **खरगोश** का परिवार भी रहता था। उनका एक **बच्चा** था। उसका नाम था गिल्लू। गिल्लू के **माता-पिता** जब **भोजन** ढूँढ़ने बाहर जाते, तो पड़ोस के पशु-पक्षी उसकी देखभाल करते थे। किट्टी **गिलहरी** उसे हरे **पत्ते** और गाजर खिलाती थी। मिट्ठू **तोता** उसके साथ खेलता था।

5. लिंग

1 (क) शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष जाति या स्त्री जाति के होने का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं। व्याकरण में लिंग का अर्थ पहचान होता है।

(ख) लिंग के दो भेद हैं – पुल्लिग और स्त्रीलिंग।

पुल्लिग – मोर, शेर, हाथी।

स्त्रीलिंग – मोरनी, शेरनी, हथिनी।

(ग) नित्य पुल्लिग – पर्वत, फल, जल।

नित्य स्त्रीलिंग – चाबी, पुड़िया, दवाई।

(घ) अप्राणिवाचक शब्दों के लिंग की पहचान विशेषण और क्रिया से की जाती है।

2 मोर – मोरनी नायिका – नायक शेरनी – शेर

गायक – गायिका दादा – दादी नर्तकी – नर्तक

3 (क) मोरनी जंगल में नाच रही है। (ख) सोहन की चाची दयालु हैं।

(ग) पुजारिन ने पूजा कर ली थी। (घ) युवती अचानक सामने आ गई।

4 (क) स्त्रीलिंग (ख) स्त्रीलिंग (ग) पुल्लिग (घ) पुल्लिग (ङ) स्त्रीलिंग

बहुविकल्पी प्रश्न

(क) चुहिया (ख) शेरनी (ग) कोयल (घ) बड़ा

रचनात्मक गतिविधि

[1]बा	ल	[2]क	[3]वि
			द्वा
[4]भ	ग	वा	[5]न
			र
[6]श्री	मा	न	[7]पु
			जा
			री

6. वचन

1 (क) शब्द के जिस रूप से यह बोध हो कि वह एक है या अनेक, उसे वचन कहते हैं।

(ख) वचन के दो भेद हैं –

1. एकवचन – लड़का, पतंग, पुस्तक।

2. बहुवचन – लड़के, पतंगें, पुस्तकें।

(ग) एकवचन – घी, घास, पानी।

बहुवचन – आँसू, दर्शन, हस्ताक्षर।

(घ) आदर प्रकट करने के लिए वचन के बहुवचन रूप का प्रयोग करते हैं।

2 (ख) दोनों गधे दुबले थे। (ग) कुत्ते काटकर भाग गए।

(घ) वह तो चला गया। (ङ) इस शहर में अनेक घर हैं।

(च) औरतें बाज़ार जा रही हैं।

3 एकवचन – चश्मा बर्फ़ी छाता पुस्तक बुढ़िया रास्ता हवा रात

बहुवचन – चाबियाँ ऋतुएँ कमरे पत्ते सड़कें चिड़ियाँ बसें पंखे

4 कहानियाँ, दिशा, पुस्तकें, नावें, कुत्ता, शक्तियाँ, घंटी, नदियाँ, बच्चे, कक्षा।

5 (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗

बहुविकल्पी प्रश्न

(क) गौ (ख) नेत्र (ग) आदर में (घ) रुपये

रचनात्मक गतिविधि

एकवचन – यूनान, सम्राट, प्रजा, डाकू, राजदरबार, चेहरे

बहुवचन – राहगीरों, सैनिक, लोग, घाव, प्राणों, हाथ-पाँव

7. कारक

1 (क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से पता चले, वह कारक कहलाता है।

(ख) कारकों को प्रकट करने वाले कारक-चिह्नों को विभक्ति-चिह्न तथा परसर्ग भी कहते हैं।

(ग) कारक के आठ भेद हैं – कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक, संबोधन कारक।

(घ) शब्द के जिस रूप से पुकारने, बुलाने या संबोधित करने का बोध हो, उसे संबोधन कारक कहते हैं।

2 (क) पर (ख) में (ग) से (घ) की (ङ) के लिए

3 (क) आँख में कुछ गिर गया है। (ख) पेड़ पर चिड़िया बैठी है।

(ग) स्टेशन से गाड़ी चली। (घ) उसे समझा दो।

4 (क) करण कारक (ख) कर्म कारक (ग) संबोधन कारक
(घ) अधिकरण कारक (ङ) संबंध कारक

बहुविकल्पी प्रश्न

(क) में (ख) करण (ग) संप्रदान (घ) स्थान

रचनात्मक गतिविधि

कारक	भेद	कारक	भेद
बाग का	संबंध कारक	बाग में/घर में/बाग में	अधिकरण कारक
किसी को	संप्रदान कारक	दानव के	संबंध कारक
बाग में/पेड़ों पर	अधिकरण कारक	स्वर में	अधिकरण कारक
बाग के	संबंध कारक	उनके	संबंध कारक
संगीत में	अधिकरण कारक	बच्चों का	संबंध कारक
बाग में	अधिकरण कारक	दानव के	संबंध कारक
डर से	अपादान कारक	काम से	अपादान कारक
बच्चों ने	कर्ता कारक	अवसर का	संबंध कारक
बाग में	अधिकरण कारक		

8. सर्वनाम

1 (क) संज्ञा के स्थान पर आने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

(ख) सर्वनाम के छह भेद होते हैं –

1. पुरुषवाचक 2. निश्चयवाचक 3. अनिश्चयवाचक
4. प्रश्नवाचक 5. संबंधवाचक 6. निजवाचक

(ग) जब कोई सर्वनाम शब्द स्वयं के ऊपर बल दे रहा हो, तो उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

उदाहरण – खुद, अपने-आप, स्वयं

2 (क) यह – निश्चयवाचक सर्वनाम (ख) तुम – पुरुषवाचक सर्वनाम
(ग) उसे – पुरुषवाचक सर्वनाम (घ) खुद – निजवाचक सर्वनाम
(ङ) उसके – पुरुषवाचक सर्वनाम

3 (क) वह बहुत तेज़ चल रहा था क्योंकि उसे देर हो रही थी।
(ख) मैं नहीं चाहती कि हम आपस में लड़ें।
(ग) तुम समय पर सारे काम करो तुम्हें माँ कुछ नहीं कहेंगी।

4 (क) मैं फल खरीदने जाऊँगा। (ख) तुम अपना काम करो।
(ग) राजू छोटा है, वह मेरा भाई है। (घ) उसकी दुकान आज बंद है।
(ङ) हमें भी खेलना है।

बहुविकल्पी प्रश्न

(क) कोई (ख) निजवाचक (ग) कुछ (घ) हमारा

रचनात्मक गतिविधि

किसी गाँव में एक ज़मींदार रहता था। **वह** बहुत कंजूस था। **अपने** यहाँ काम करने वालों को वह बहुत सताता था। महीना भर सख्ती से काम लेता और जब वेतन देने का समय आता, तो **उन्हें** ऐसा काम बताता कि **वे** उसे कर नहीं पाते और वह उनका वेतन हड़प जाता। अब ज़मींदार के यहाँ काम करने से मना करने लगे। ज़मींदार की **अपनी** कोई संतान नहीं थी। हारकर **उसने** मुनादी करवा दी, "जो भी **मेरे** यहाँ काम करके **मुझे** प्रसन्न कर देगा, उसे **मैं** अपना उत्तराधिकारी बना लूँगा।"

9. विशेषण

1 (क) संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं। विशेषण के चार भेद हैं – 1. गुणवाचक विशेषण 2. संख्यावाचक विशेषण 3. परिमाणवाचक विशेषण 4. सार्वनामिक विशेषण

(ख) संख्यावाचक विशेषण में शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की संख्या संबंधी विशेषता बताते हैं। और परिमाणवाचक विशेषण में शब्द नाप-तोल या परिमाण संबंधी विशेषता बताते हैं।

(ग) जब सर्वनाम किसी संज्ञा के पहले आकर उसकी विशेषता बताते हैं, तो ऐसे में उन सर्वनामों को सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।
उदाहरण – उस लड़के को जाने दो।
यहाँ 'उस' (सर्वनाम) 'लड़के' (संज्ञा) की विशेषता बता रहा है, अतः यह सार्वनामिक विशेषण है।

2 (क) अच्छे (ख) कई (ग) कितना (घ) दो (ङ) इस

3	**विशेषण**	**विशेष्य**
(क)	खाली	थैला
(ख)	दो	कप
(ग)	सूखी	डाली
(घ)	अच्छा	माली

4 (क) सार्वनामिक (ख) सार्वनामिक (ग) गुणवाचक
(घ) गुणवाचक (ङ) अनिश्चित संख्यावाचक

बहुविकल्पी प्रश्न

(क) गुणवाचक (ख) बहुत (ग) यह लड़का (घ) अवस्था

रचनात्मक गतिविधि

विशेषण		**विशेषण**	
मीठे	फल	कुशल	कारीगर
चचेरी	बहन	सूखी	टहनी
गुलाबी	चुनरी	बीमार	व्यक्ति
चौकोर	मेज़	चौथी	कक्षा
मासिक	आय	बड़ा	बगीचा

गु	ला	बी	ब	ड़ा
मी	ठे	मा	सि	क
चौ	को	र	च	सू
थी	ल	ह	चे	खी
कु	श	ल	री	म

10. क्रिया

1 (क) शब्द के जिस रूप से किसी काम के करने तथा होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं।

(ख) क्रिया के दो भेद हैं – अकर्मक क्रिया एवं सकर्मक क्रिया।

(ग) सकर्मक क्रिया में क्रिया का प्रभाव कर्ता की अपेक्षा कर्म पर पड़ता है। यदि वाक्य में क्रिया के साथ 'क्या' लगाकर प्रश्न पूछने पर उत्तर मिले, तो क्रिया सकर्मक होगी।

2 (क) नाची (ख) धो लिए (ग) मनाएँगे (घ) खो गए (ङ) जीतेगी

3 (क) खाओ (ख) जागती (ग) हँसती (घ) तैरने

4 (क) सकर्मक (ख) सकर्मक (ग) अकर्मक (घ) अकर्मक

बहुविकल्पी प्रश्न

(क) काटना (ख) वह नहाया (ग) क्या (घ) फूल खिलना

रचनात्मक गतिविधि

बना रहा था, आ गया, देखकर, उड़ गए, रह न गया, आई, देख, बोला, बना दूँ, बैठ जाइए, बैठ गया, बटोर, लगा देखने।

11. काल (क्रिया का समय)

1 (क) क्रिया के जिस रूप से उसके करने या होने के समय का पता चले, उसे काल कहते हैं।

(ख) काल के तीन भेद हैं – 1. भूतकाल 2. वर्तमान काल 3. भविष्यत् काल।

(ग) वर्तमान काल – 1. बाग में पेड़ हैं। 2. रवि पतंग उड़ा रहा है।
भविष्यत् काल – 1. बाग में पौधे उगेंगे। 2. रवि पतंग उड़ाएगा।

2 (क) वर्तमान काल (ख) भविष्यत् काल (ग) वर्तमान काल (घ) भूतकाल

3 (क) पक्षी ने दाना चुगा। (ख) मारिया नाच दिखाएगी।
(ग) मयंक पत्र लिख रहा है। (घ) तुम कब आए?

4 भूतकाल – सोया, लिखा, नाचा, हुआ
वर्तमान काल – खा रहे हैं, जाती है, पढ़ रहा है, उड़ता है
भविष्यत् काल – नाचेगी, आएगा, खेलेंगे, खाएगी

बहुविकल्पी प्रश्न

(क) चढ़ गया (ख) भविष्यत् काल (ग) उगाओ (घ) समय का

रचनात्मक गतिविधि

हम सभी छात्र पिकनिक पर जा रहे हैं। सर्वप्रथम हम सभी अपने आप से वादा करते हैं कि हम छात्र अनुशासन में रहेंगे। अपने अध्यापकों के आदेशों का पालन करेंगे। सभी छात्रों का अपने-अपने घर से तरह-तरह के भोजन ले जाना और मिल-बैठकर खाने का अलग ही मज़ा होगा। कुछ छात्र खेलने के लिए तरह-तरह के सामान भी लेकर जाएँगे; जैसे – बॉल, रस्सी, बैडमिंटन इत्यादि। खेलने के साथ-साथ तरह-तरह के झूले भी झूलेंगे। साथ-साथ इस बात का भी ध्यान रखेंगे कि सार्वजनिक संपत्ति को हानि नहीं पहुँचे। घर पहुँचकर अपने माता-पिता से दोस्तों और अध्यापकों के साथ बिताए गए इन मनोरंजन के क्षणों का उल्लेख करेंगे।

12. अविकारी शब्द–अव्यय

1 (क) क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रियाविशेषण कहते हैं।
(ख) क्रियाविशेषण के भेद – कालवाचक, स्थानवाचक, रीतिवाचक, परिमाणवाचक।
(ग) संबंधबोधक में शब्द संज्ञा या सर्वनाम के साथ लगकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जोड़ते हैं जबकि समुच्चयबोधक में शब्द दो वाक्यांशों और दो शब्दों को जोड़ते हैं।
(घ) हैरानी, दुख, खुशी, घृणा, भय आदि भावों को प्रकट करने वाले शब्दों को विस्मयादिबोधक शब्द कहते हैं।

2 (क) यहाँ – स्थानवाचक (ख) उधर – स्थानवाचक
(ग) कितना – परिमाणवाचक (घ) ज़ोर से – रीतिवाचक

3 (क) और (ख) क्योंकि (ग) इसलिए (घ) पर

4 (क) उफ्! कितनी गरमी है।
(ख) वाह! कितनी अच्छी कार है।

(ग) ओह! आज मैं अपना नाश्ता घर भूल आई।

(घ) अरे! सुबह हो गई।

5 (क) संबंधबोधक (ख) क्रियाविशेषण (ग) संबंधबोधक

(घ) क्रियाविशेषण (ङ) संबंधबोधक (च) क्रियाविशेषण

बहुविकल्पी प्रश्न

(क) दूर (ख) के अंदर (ग) दुख (घ) सदैव

रचनात्मक गतिविधि

क्रियाविशेषण – शीघ्र, बाहर, शाम, अचानक, नीचे।

समुच्चयबोधक – और, किंतु, ताकि, तो, अतः।

संबंधबोधक – के पीछे, के संग, के बाहर, की तरह, के पास।

विस्मयादिबोधक – ओह, छिः, थू, धत्, वाह।

13. विराम चिह्न

1 (क) विराम का अर्थ है– रुकना। भाषा में हम बीच-बीच में विराम लेते हैं। इन विरामों को हम जिन चिह्नों द्वारा दर्शाते हैं, उन्हें विराम चिह्न कहते हैं।

(ख) भाषा में विराम चिह्न होने से भाषा पढ़ने में अच्छी लगती है। यह सरल भी होती है और आसानी से समझी भी जाती है।

(ग) पूर्णविराम (।) वाक्य पूरा होने पर लगता है जबकि अल्पविराम (,) का प्रयोग संज्ञाओं, संख्याओं और वाक्य के टुकड़ों के बीच में जब हम थोड़ी देर रुकते हैं, तब होता है।

2 (क) करण, शौर्य, कविता और नीलू कहाँ गए हैं?

(ख) धीरे-धीरे चलो।

(ग) अरे! तुम्हें अक्ल है कि नहीं।

(घ) बापू ने कहा था, "अहिंसा परम धर्म है।"

(ङ) वह कौन था, जिसने तुम्हें धक्का दिया?

3 (क) जल्दी-जल्दी खाना खाओ। (ख) वाह! क्या बात कही।

(ग) बापू ने कहा, "सदा सच बोलो।" (घ) तुम कहाँ से आ रहे हो?

4 ? – प्रश्नसूचक चिह्न ! – विस्मयादिबोधक चिह्न

\- – योजक चिह्न " " – उद्धरण चिह्न

बहुविकल्पी प्रश्न

(क) योजक (ख) पूर्णविराम (ग) " " (घ) कब आए

रचनात्मक गतिविधि

पंडित जी भले आदमी थे। वे रोज़ अपने घर किसी न किसी को खाने का निमंत्रण दे आते। बेचारी पंडिताइन बहुत परेशान रहती थी। एक दिन तीन मेहमान आए। वे हँस-हँसकर बातें कर रहे थे। पंडित जी हाथ-मुँह धोने गए, पंडिताइन एक मूसल साफ़ करने लगी। एक मेहमान ने पूछा, "यह क्यों साफ़ कर रही हो?" पंडिताइन बोली, "पंडित जी यह मूसल तुम्हारे सिर पर मारकर पूजा शुरू करेंगे।" यह सुनकर तीनों मेहमान भाग गए।

14. विलोम शब्द

1 अनुचित – उचित निरक्षर – साक्षर अज्ञात – ज्ञात

अवज्ञा – आज्ञा शांति – अशांति उपेक्षा – अपेक्षा

अहिंसा – हिंसा असंभव – संभव अपयश – यश

2 (क) वाचाल (ख) निर्बल (ग) अधर्म (घ) नवीन (ङ) दोष

3 (क) मित्र (ख) रक्षक (ग) स्वाधीन (घ) आदर (ङ) अमीर

बहुविकल्पी प्रश्न

(क) प्रकाश (ख) वाचाल (ग) पतन (घ) निर्धन

रचनात्मक गतिविधि

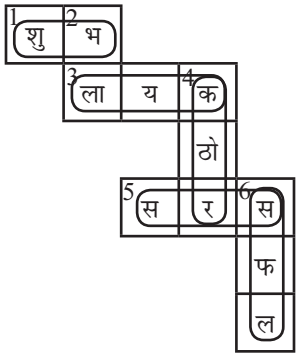

15. समानार्थी शब्द

1 मछली, मीन आग, अग्नि बादल, जलद

2 (क) सुमन, कुसुम, फूल। (ख) धरती, भूमि, धरा। (ग) वायु, पवन, समीर।

3 चाँद – शशि मेह – वृष्टि सरिता – तटिनी कर – हस्त

बहुविकल्पी प्रश्न

(क) सिंधु, समुद्र (ख) अनिल (ग) हाथी (घ) दीया

रचनात्मक गतिविधि

चाँद – शशि, सुधाकर।

बेटा – सुत, तनय।

हाथ – कर, हस्त।

सोना – स्वर्ण, कनक।

माता – माँ, जननी।

बादल – जलद, नीरद।

सु	धा	क	र	माँ
त	ज	न	नी	ट
स्व	र्ण	क	र	त
श	ज	ल	द	न
शि	ह	स्त	ल	य

16. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

1 (क) ईश्वर में विश्वास रखने वाला (ख) वर्ष में एक बार होने वाला

(ग) शहर में रहने वाला (घ) बहुत बोलने वाला

(ङ) मांस खाने वाला (च) नभ में रहने वाला

2 जो श्रम करता हो – श्रमिक जो बहुत बोलता हो – वाचाल

पुराने ज़माने का – प्राचीन नमक रखने का पात्र – नमकदानी

जो लिखा हुआ हो – लिखित

3 (क) विदेशी (ख) मृदुभाषी (ग) नभचर (घ) कृतज्ञ (ङ) चित्रकार

बहुविकल्पी प्रश्न

(क) धार्मिक (ख) दर्शनीय (ग) दयालु (घ) सुनने वाला

रचनात्मक गतिविधि

जहाँ तीन रास्ते मिलते हों – तिराहा जल में रहने वाला – जलचर

गाँव में रहने वाला – ग्रामीण गगन को छूने वाला – गगनचुंबी

17. वाक्य

1 (क) शब्दों का वह समूह जिसका कोई अर्थ हो, जो हमारी बात को स्पष्ट करे, वाक्य कहलाता है। वाक्य के दो अंग माने जाते हैं– 1. उद्देश्य 2. विधेय।

(ख) शब्दों और वाक्यों में अशुद्धियाँ सही उच्चारण न होने के कारण, वर्णों या शब्दों के क्रम में न होने के कारण और व्याकरण की अज्ञानता के कारण होती हैं।

2 ऊपर, साप्ताहिक, वाणी, आशीर्वाद, दीवार, पढ़ाई, दाँत, परीक्षा, कवि

3 (क) वृक्ष से पत्ते गिरे। (ख) मुझे जूस पीना है।

(ग) वह चलते-चलते रुक गया। (घ) टीना बस से जाएगी।

(ङ) तुम ज़रूर आना।

बहुविकल्पी प्रश्न

(क) हिंदु (ख) नीति (ग) धीमी (घ) तुम्हें

रचनात्मक गतिविधि

एक बार एक राजा घने वन में शिकार खेल रहा था। अचानक आकाश में काले बादल छा गए और मूसलाधार वर्षा होने लगी। धीरे-धीरे अँधेरा छा गया। अँधेरे में राजा अपने महल का रास्ता भूल गया। भूख-प्यास और थकावट से परेशान राजा जंगल के किनारे एक टीले पर बैठ गया।

थोड़ी देर बाद उसने वहाँ तीन बालकों को देखा। वे अच्छे मित्र थे। वे अपने गाँव की ओर जा रहे थे। राजा ने उन्हें बुलाया और पूछा, "क्या कहीं से थोड़ा भोजन और जल मिलेगा? मैं बहुत भूखा-प्यासा हूँ।"

बालकों ने उत्तर दिया, "अवश्य। हम अपने घर जाकर कुछ ले आते हैं।"

18. मुहावरे

1 (क) आजकल ऋतु ईद का चाँद हो गई है।

(ख) अक्ल के दुश्मन अपना ही काम बिगाड़ लेते हैं।

(ग) हर बच्चा अपनी माँ की आँख का तारा होता है।

(घ) सच के सामने झूठ नौ दो ग्यारह हो जाता है।

2 (क) युवराज ने इंग्लैंड के गेंदबाज़ों के छक्के छुड़ा दिए।

(ख) अनवर इतना सीधा है कि कोई भी उसे उल्लू बना सकता है।

(ग) जल्दी से खाना दो, मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं।

(घ) पहले तो इतना अकड़ रहे थे, अब क्यों भीगी बिल्ली बन रहे हो।

3 नाक में दम करना कान पर जूँ न रेंगना आँख का तारा

मुँह फेर लेना हाथ साफ़ करना दाँत खट्टे करना

बहुविकल्पी प्रश्न

(क) घोड़े बेचकर सोना (ख) बुद्धि काम न करना (ग) मुँह पर खाना

(घ) हाथ साफ़ करना

रचनात्मक गतिविधि

सोनू एक बहादुर बालक था। लेकिन वह घर से बाहर बहुत कम निकलता था। हमेशा ईद का चाँद बना रहता। उसके मित्र उसका मज़ाक उड़ाते थे। एक दिन सोनू घर में अकेला था। चोर चोरी करने के इरादे से घर में घुस आए और उसके हाथ-पाँव बाँधने की कोशिश की। लेकिन उनको मुँह की खानी पड़ी। सोनू ने बड़ी फुर्ती से उन चोरों के छक्के छुड़ा दिए। डर के मारे चोर नौ दो ग्यारह हो गए। बहादुर सोनू सबकी आँखों का तारा बन गया।

19. पत्र-लेखन

(क) राम नगर

स्टेशन रोड, कानपुर

दिनांक : 15 अक्टूबर, 20××

प्रिय सचिन,

आशा करता हूँ आप कुशल होंगे। पत्र लिखते समय मुझे उत्साह है कि पत्र में मैं आपको अपने पेड़ लगाने के अनुभव के बारे में लिख रहा हूँ। हमारे घर के पास एक बगीचा है। जिसमें हरियाली नाम मात्र को है, जबकि अधिकतर लोग यहाँ सैर करने और योग करने आते हैं। मैंने और मेरे सभी मित्रों ने अपने-अपने जमा जेबखर्च से विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे नर्सरी से खरीदकर बगीचे में लगाए और उनकी देखभाल की प्रतीज्ञा ली। ऐसा करके मुझे बहुत खुशी हुई क्योंकि इससे मैं भी पर्यावरण की सुरक्षा में भागीदार बन गया।

तुम्हारा मित्र

सौरभ

(घ) 31 बी, कैलाश नगर

नई दिल्ली

दिनांक : 14 अक्टूबर, 20××

प्रिय सखी

नमस्कार।

आशा करती हूँ आप सब कुशल होंगे। हम भी यहाँ पर सकुशल हैं। सखी तुम्हारा मित्र मिला। जानकर खुशी हुई कि तुमने निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। तुम्हें बहुत बधाई हो। यह तुम्हारी मेहनत और सोच का परिणाम ही है जो तुम आज इस नतीजे पर पहुँचीं। शेष बातें मिलने पर।

तुम्हारी सखी

ऋतु

20. निबंध-लेखन

(क) **मेरी नानी माँ**

मेरी नानी माँ का नाम श्रीमती सरोजनी है। वे अहमदाबाद, गुजरात में रहती हैं। वे हम सब को बहुत प्यार करती हैं।

नानी और उनका ढेर सारा प्यार बड़ी बेसब्री से हमारा इंतज़ार करता है। हम अकसर छुट्टियों में उनके पास जाते हैं। जब हम उनके घर पहुँचते हैं तो उनमें दुगुनी फुर्ती आ जाती है, हमें तरह-तरह के पकवान बनाकर खिलाती हैं। मेरी नानी माँ को गुस्सा नहीं आता। हमसे कोई गलती हो जाने पर वे हमें प्यार से समझाती हैं। वे हम सभी का ध्यान रखती हैं। मैं और मेरा भाई काम में उनकी मदद करते हैं। रात होते ही हम दोनों भाई-बहन नानी को घेरकर बैठ जाते हैं– कहानी सुनने। फिर नानी कहानी सुनाना शुरू करती हैं। एक कहानी खत्म हुई तो दूसरी कहानी। इस तरह कहानी सुनते-सुनते हम सो जाते हैं।

नानी के साथ मस्ती करते-करते कब छुट्टियाँ बीत जाती हैं पता ही नहीं लगता और हम नानी की प्यार भरी यादों के साथ घर वापिस लौट आते हैं। और इंतज़ार करते हैं अगली गर्मियों की छुट्टियों का।

(ख) **गणतंत्र दिवस**

26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान लागू हुआ था। इसी दिन हमें कुछ अधिकार मिले और कुछ कर्तव्य तय हुए। इसलिए इस दिन को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह देश के राष्ट्रीय पर्वों में से एक है। इस दिन देशभर में अवकाश होता है। गणतंत्र दिवस समारोह देश की राजधानी दिल्ली में मनाया जाता है। जहाँ से देश के सभी राज्यों के शासन की बागडोर संभाली जाती है। दिल्ली के राजपथ पर भव्य परेड निकाली जाती है जो राजधानी के अनेक क्षेत्रों में अपने रंग-रूप की छटा बिखेरती हुई लालकिले पर समाप्त होती है।

गणतंत्र दिवस के समारोह का आरंभ राष्ट्रपति के विजय चौक पहुँचकर राष्ट्रीय ध्वज फहराने और शहीदों को इक्कीस तोपों की सलामी देने से होता है। जल, थल और वायु तीनों सेना की टुकड़ियाँ राष्ट्रपति को सलामी देती हुई निकलती हैं। इस परेड में हमारी सैन्य शक्तियों अस्त्र-शस्त्र, मिसाइलों, टैंकों, युद्ध विमानों आदि का प्रदर्शन होता है। सेनाओं के साथ अर्धसैनिक बलों, एन॰सी॰सी॰ एवं पुलिस की टुकड़ियों की भी परेड निकलती है। सेनाओं की टुकड़ियों के मधुर बैंड गणतंत्र भारत, विजयी भारत का गान करते हुए सारे वातावरण को देशभक्ति के मधुर संगीत से भर देते हैं। सेना की टुकड़ियों के बाद हर राज्य की झांकी निकलती है। झांकी में उस राज्य की संस्कृति और विकास की झलक दिखाई देती है। लोकनर्तक अपनी पारंपरिक वेशभूषा और नृत्य से सबका मन मोह लेते हैं। स्कूली बच्चे आकर्षक और रंग-बिरंगी वेशभूषा में कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए चलते हैं तो ऐसा लगता है मानो सारे रंग राजपथ पर बिखर गए हों। अंत में वायुसेना के विमान राजपथ पर रंग-बिरंगे फूल बिखेरते जाते हैं तो ऐसा लगता है मानो आसमान भी इस दिन को मनाने धरती पर आना चाहता हो। इस तरह समारोह की समाप्ति होती है।

21. अपठित गद्यांश

1 1. मदर टेरेसा के मन में असहाय और पीड़ितों के लिए तड़प थी।

2. उन्होंने कोलकाता के 'बड़ा बाज़ार' में एक स्थान पर लोगों का जमघट लगा देखा।

3. नन्हा शिशु कूड़ेदान में कूड़े के ढेर पर पड़ा था।

4. मदर टेरेसा ने लपककर बच्चे को उठा लिया और अपने साथ ले गईं।

5. ममता की मूर्ति

2 1. (घ) 2. (ख) 3. (ख) 4. (ग) 5. (ख)

22. कहानी-लेखन

1

कौए की चतुराई

एक पेड़ पर कौआ अपने परिवार के साथ घोंसले में रहता था। उसी पेड़ के नीचे एक साँप की बाँबी थी, जो कौए के घोंसले से अंडे खा जाता था। कौआ और उसकी पत्नी बहुत दुखी थे। एक दिन राजकुमारी सरोवर में स्नान कर रही थी। तभी कौए को एक उपाय सूझा। वह राजकुमारी का हार लेकर उड़ गया तथा साँप की बाँबी के पास डाल दिया। हार की तलाश में आए सैनिकों ने साँप को हार के पास बैठे देखा और उसे मार डाला। यह देखकर कौआ बहुत प्रसन्न हुआ। उसे अपने शत्रु से हमेशा के लिए छुटकारा मिल गया।

शिक्षा – चतुराई से ताकतवर शत्रु को हराना भी संभव है।

2

एकता में बल

एक नदी में बड़ा-सा मगरमच्छ आता और प्रतिदिन अधिक से अधिक मछलियों को मारकर खा जाता। बची हुई मछलियाँ डर के मारे इधर-उधर भागतीं। इस तरह धीरे-धीरे मछलियाँ समाप्त हो रही थीं। कुछ मछलियों का ध्यान इस तरफ़ गया तो उन्हें काफ़ी चिंता हुई। उन्होंने मित्र मछलियों के साथ मिलकर मगरमच्छ से मुकाबला करने का फ़ैसला लिया।

एक दिन जैसे ही मगरमच्छ मछलियों को मारने लगा वैसे ही मछलियों ने उस पर चारों तरफ़ से वार करना शुरू कर दिया। किसी ने उसकी पूँछ मुँह में दबाई तो किसी ने उसका खुला जबड़ा पकड़ लिया। एक ने उसकी पीठ पर वार करना शुरू कर दिया। एक बड़ा-सा मगरमच्छ एकसाथ छोटी-छोटी मछलियों से मुकाबला नहीं कर पाया। उनको लगातार वार करता देख मगरमच्छ डरकर नदी से भाग गया। इस तरह बहादुर मछलियों ने मिलकर अपने जीवन की रक्षा की।

शिक्षा – मिल-जुलकर बड़े से बड़े संकट को टाला जा सकता है।